KAAV INTERNATIONAL JOURNAL OF ARTS, HUMANITIES & SOCIAL SCIENCES
A REFEREED BLIND PEER REVIEW QUARTERLY JOURNAL
KIJAHS/OCT-DEC2017/VOL-4/ISS-4/A2 PAGE NO.5-8
ISSN: 2348-4349 IMPACT FACTOR (2017) – 7.9183
WWW.KAAVPUBLICATIONS.ORG

वृद्धा आश्रम एवं उनके निवासियों का समाजशास्त्रीय विश्लेषणात्मक अध्ययन ''सेवा सदन, प्रमोदवन, चित्रकूट'' के विशेष संदर्भ में

[1]डॉ0 उमेश कुमार दीक्षित

[1]रिसर्च फैलो (पी0डी0एफ0), आई0सी0एस0एस0आर0, नई दिल्ली

भारतीय समाज की पहचान उसकी संस्कृति की सुदृढता है जो राम एवं श्रवण कुमार जैसे पुत्रों का इतिहास है, जो माता–पिता की इच्छा को आज्ञा मानकर अपना सम्पूर्ण जीवन अर्पण कर दिया, ऐसी संस्कृति में जन्म लेने के बाद भी भारतवर्ष में वृद्धावस्था की समस्या यह स्पष्ट करती है कि हमारा सांस्कृतिक क्षरण हो चुका है। पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव हमारे जीवन पर इतना पड़ चुका है कि हम अपने परिवार में तथा समाज में वृद्धों को यथोचित सम्मान तथा समुचित स्थान नहीं प्रदान कर पा रहे है। भारत में वृद्धावस्था की समस्या एक सार्भौमिक स्वरूप ग्रहण कर चुकी है क्योंकि किसी न किसी रूप में आज यह समस्या समाज के ज्यादातर परिवारों में देखी जा सकती है जिसका प्रमुख कारण दो पीढ़ियों के मध्य विभिन्न मुददों पर पाया जाने वाला मतभेद या टकराव है, क्योंकि सामाजिक संरचना में होने वाले परिवर्तनों के साथ युवा तो स्वयं को सरलता से परिवर्तित कर लेती है, किन्तु हमारी वृद्ध पीढ़ी अपने परम्परागत मूल्यों के साथ किसी प्रकार का समझौता करना नहीं चाहती, वह ऐसा महसूस करती है कि आज का युवा वर्ग या युवा पीढ़ी गलत मार्ग पर चल रही है जिन्हें वह सुधारना चाहती है और यही सुधारवादी प्रवृत्ति उनमें संघर्ष को जन्म देती है।

इसके अतिरिक्त यह देखा जाय तो कहीं न कहीं रिश्तों की मान्यता, उनकी मर्यादा, निष्ठा तथा पारम्परिक विश्वास में कमी हो गयी हैं आज की युवा पीढ़ी, दादा–दादी, चाचा–चाची, मामा, मौसी, बुआ आदि जैसे महत्वपूर्ण रिश्तों में भी रूचि नहीं रखती। आज की युवा पीढ़ी वृद्धों के अनुभवों से कुछ सीखना नहीं चाहती अपितु उनके द्वारा दिया जाने वाला निःशुल्क ज्ञान को मिथ्या, सिरखाऊ, फिजूल की वकवास अनावश्यक हस्तक्षेय मानकर वृद्धावस्था को ही एक समस्या मानती है जिससे वह अति शीघ्र निजात पाना चाहते है। वृद्धों के प्रति हृदय में सम्मान, उनकी सेवा सुश्रूषा करना आज के युवा वर्ग के लिए वोझिल सा हो गया है। ''प्रयोग करो और फेंक दो'' की नीति अपनाते हुए आज युवा वर्ग अधिकतर स्वयं अपने आपको अलग रखकर मृग मारीचिक सदृश्य, सुख–चैन का जीवन व्यतीत करना चाहता हैं आज बच्चे वृद्ध माता–पिता ने अपना सब कुछ न्यौछावर कर अपनी संतान का लालन–पालन, संवर्धन व विकास किया हो और उनके वृद्ध हो जाने पर वही संतान उन्हें भार समझे तो ऐसी स्थिति में वृद्धों की पीढा का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है।

साहित्य समीक्षा : वृद्धों के संदर्भ में अनेक अध्ययन समाजशास्त्रियों एवं मानवशास्त्रियों द्वारा किये गये है इनमें Desai, K.G. and Naik, R.D. (1971), "Problem of Retired people in grater Bombay"; Chellan Raju (1982) "Problems of old Age", Hazan, Main (1989) 'Religion in old age Home', Malhotra, R.K. (2003), "Old-age Homes opinion"; Aruna Khatri, "The Problem of old age in India", Anuradha Thakur (2008), "Care of senior citizens and the Role of the state"; Purohit, C.R. and Sharma, R. (1980) "A study of aged 60 year and above in social profile"; Bose, A. (1997) "The condition of the elderly in India"; Reddy, P.H. (1996) "The Health of the aged in India"; Vijaya Kumar, S. (1995) "Challenges before the elderly: An Indian Scenario".

Copyright © 2017 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.org

अध्ययन के उद्देश्य –

1. वृद्ध आश्रम निवासियों की सामाजिक, आर्थिक एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी स्थिति का अध्ययन करना।
2. वृद्ध आश्रम द्वारा प्रदत्त सुविधाओं का विश्लेषण करना ।
3. वृद्ध आश्रम में आने के कारणों का अध्ययन करना।

अध्ययन क्षेत्र : प्रस्तुत शोध क्षेत्र मध्य प्रदेश राज्य के चित्रकूट स्थित ''वृद्ध सेवा सदन'' का चयन किया गया है। इस वृद्ध आश्रम में निवासित कुल 488 महिला एवं पुरूष वरिष्ठ नागरिकों में से कुल 100 वरिष्ठ नागरिकों का चयन 'दैव निदर्शन पद्धति' की लाटरी विधि द्वारा किया गया। शोध में सम्मिलित समस्त सूचनादाता 60 वर्ष से अधिक आयु के है।

शोध प्रारूप : शोध प्राथमिक एवं द्वितीयक तथ्यों पर आधारित है प्राथमिक तथ्यों के संकलन हेतु साक्षात्कार, अवलोकन तथा साक्षात्कार अनुसूची को आधार बनाया गया। तथा द्वितीयक श्रोतों में शोध से सम्बन्धित पुस्तकें, सरकारी आंकड़े, जनगणना, इण्टरनेट, शोध पत्र–पत्रिकाएँ आदि का प्रयोग किया गया है।

उपकल्पानाएँ

1. क्या अभी भी भारतीय तीर्थ स्थानों पर बने वृद्ध आश्रमों में 'वानप्रस्थी' जीवन व्यतीत करने के उद्देश्य से आते हैं?
2. वृद्ध आश्रमों में अधिकतर परिवार से उपेक्षित, असहाय वृद्धजन ही आते है।
3. वर्तमान समय में 'वृद्ध आश्रम' वृद्धों की समस्याओं के निराकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

वृद्धों की स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएँ –

वस्तुतः वृद्धावस्था जीर्ण–शीर्ण काया का पर्याय है इसीलिए इसे रोगों, शारीरिक व्याधियों और कष्टों का केन्द्र माना जाता है वृद्धावस्था में अधिकांश वृद्धजनों का स्वास्थ्य बहुत अच्छा नहीं रहता, उन्हें कई बीमारियाँ घेर लेती हैं इन्हीं बीमारियों को ज्ञात करने के लिए हमने सूचनादाताओं से उनकी बीमारियाँ ज्ञात करने का प्रयास किया है।

तालिका संख्या 01
क्या आप निम्नलिखित में से किसी बीमारी से पीड़ित हैं?

क्रम संख्या	बीमारी का नाम	संख्या	प्रतिशत
1	हृदय रोग	01	01
2	कैंसर	–	–
3	डायविटीज	28	28
4	ऑख, नाक, गला	39	39
5	श्वांस सम्बन्धी	19	19
6	अन्य	–	–
7	कोई बीमारी नहीं	07	07
	योग	100	100

उपर्युक्त तालिका का विश्लेषण करने से ज्ञात होता है कि चित्रकूट स्थित वृद्ध आश्रम में 39 प्रतिशत वृद्ध ऑख, नाक, गला से पीड़ित हैं, 28 प्रतिशत सूचनादाता डायविटीज से ग्रस्त है। इसी प्रकार 19 प्रतिशत सूचनादाता श्वांस सम्बन्धी रोग से, तथा 06 प्रतिशत सूचनादाता त्वचा सम्बन्धी रोग से पीड़ित हैं। मात्र 01 सूचनादाता हृदय रोग से पीड़ित है। 07 प्रतिशत सूचनादाता ऐसे है जिनका कहना है कि उन्हें कोई बीमारी नहीं है वह पूर्ण रूप से स्वास्थ्य है।

तालिका संख्या 02
वृद्ध आश्रम मे निवास करने वाले सूचनादाताओं से यह प्रश्न पूछने पर कि क्या इस आश्रम द्वारा आपको मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति की जाती हैं?

क्रम संख्या	प्रतिक्रिया	संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	–	–
2	नहीं	100	100
	योग	100	100

Copyright © 2017 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.org

इस सम्बन्ध में जब हमने सूचनादाताओं से यह जानने का प्रयास किया कि जब आश्रम द्वारा सुविधाँए प्रदत्त नहीं की जा रही है तो फिर कैसे इन आवश्यकताओं की पूर्ति होती हैं? तो इस सम्बन्ध में सूचनादताओं द्वारा दी गई प्रतिक्रियाओं में 29 प्रतिशत सूचनादाता पेंशनर है, 22 प्रतिशत सूचनादाताओं के बच्चे मदद करते है, 19 प्रतिशत सूचनादाताओं के पास एकत्रित की गई धन/पूँजी है, 13 प्रतिशत सूचनादाता भिक्षावृत्ति करके अपना जीवन यापन करते है तथा 12 प्रतिशत सूचनादाताओं का कहना हैं उन्होंने अपना मकान–दुकान व कृषि किराये पर दे रखी है उसी से किराया आता है और जीवनयापन करते है। 05 प्रतिशत सूचनादाताओं का कहना है कि उन्होंने बीमा–पालिसी करा रखी है जिससे धन समय–समय पर आता रहता है।

तालिका संख्या 03

यदि नही तो फिर कैसे इन आवश्यकताओं की पूर्ति होती हैं?

क्रम संख्या	सूचनादाताओं के आय का श्रोत	आवृत्ति	प्रतिशत
1	बच्चे भेजते हैं	22	22
2	किराया आता हैं	12	12
3	पेंशनर हैं	29	29
4	एकत्रित धन/पूँजी	19	19
5	भिक्षावृत्ति करके	13	13
6	अन्य	05	05
	योग	100	100

सारणी संख्या 2 से स्पष्ट होता है कि इस आश्रम में निवास करने वाले सूचनादाताओं को आश्रम द्वारा आवास सुविधा को छोड़कर कोई सुविधा प्रदान नहीं की जाती है। दरअसल, इस आश्रम की स्थापना स्व0 श्री एम0पी0 सिंह (आई0ए0एस0) ने 1982 में की थी इन्हीं के प्रयासों द्वारा यह आश्रम सरकार द्वारा अनुदानित हुआ। इसी अनुदान से इस आश्रम में सभी आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध थी, किन्तु सन 2003 में संस्थापक की मृत्यु के पश्चात आश्रम प्रबन्ध तन्त्र राजनैतिक विवादों में फॅस गया, जिसके कारण केन्द्र एवं राज्य सरकारों से प्राप्त होने वाला अनुदान भी बन्द हो गए। यही कारण है कि शत–प्रतिशत सूचनादाताओं ने आश्रम द्वारा प्रदत्त की जाने वाली सुविधाओं को 'ना' कहा है।

तालिका संख्या 04

आपके 'वृद्ध आश्रम' में आने की पीछे क्या कारण थें?

क्रम संख्या	प्रतिक्रिया	संख्या	प्रतिशत
1	पारिवारिक कलह, उपेक्षा या अमर्यादित आचरण	91	91
2	वानप्रस्थी जीवन व्यतीत करने के उद्देश्य से	09	09
	योग	100	100

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है कि हमारे मूल्य बदल रहे है, अपने बुजुर्गों की सेवा करना जहाँ हमारा कर्तव्य हुआ करता था आज उसका स्थान व्यक्तिवादिता ने ले लिया है। यही कारण है कि 93 प्रतिशत वृद्ध सूचनादाताओं का मानना है कि वह इस आश्रम में अपने परिवार में पारिवारिक कलह, अमर्यादित आचरण एवं उपेक्षा की वजह से आये है। मात्र 09 प्रतिशत सूचनादाता ही ऐसे थे जिन्होंने माना कि वह अपनी आत्मिक शान्ति व मोक्ष की प्राप्ति के लिए वानप्रस्थी जीवन व्यतीत करने के उद्देश्य से इस आश्रम में आये है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

भारतीय समाज की परम्परा और इसके इतिहास से पता चलता है कि प्राचीनकाल में 'वृद्धों' की समाज में अत्यन्त उच्च स्थिति थी, उस समय वृद्धावस्था की न तो कोई समस्या थी और न ही 'वृद्धावस्था' स्वयं में एक समस्या, किन्तु संयुक्त परिवार के विघटन के साथ–साथ परिस्थितियाँ बहुत तेजी से बदली और संयुक्त परिवार बहुत तीव्र गति विघटित होकर एकल परिवारों में परिवर्तित हो गए, एकल परिवारों में पति–पत्नी और अविवाहित बच्चे रहते है, ऐसी स्थिति में 'वृद्धा लोग' कहाँ जायें ? जिस पीढ़ी ने अपने जीवन का उर्जावान समय परिवार, समाज तथा राष्ट्र के विकास एवं समृद्धि के लिए अर्पित कर दिया, वही आज उपेक्षा, अमर्यादित आचरण का दंश झेल रही है। अतः इसके लिए सरकार को इस सम्बन्ध में बनाये गए कानूनों को सख्ती से लागू किये जाने की नितान्त आवश्यकता है। साथ ही साथ वरिष्ठ नागरिकों के लिए पर्याप्त सामाजिक सुरक्षा योजनाऐं लागू की जायें, ताकि वह किसी पर आश्रित न रह सकें।

Copyright © 2017 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.org

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. वन्दना रानी (1998) ''वृद्धजन समस्याएं एवं प्रत्याशाएँ'' प्रकाशित शोध प्रबन्ध एम0जे0पी0 रूहेलखण्ड वि0वि0, बरेली।
2. राष्ट्रीय वृद्ध नीति (1999) भारत सरकार, नई दिल्ली।
3. सुमनरानी सिन्हा (2000) ''वृद्धजनों का समाजशास्त्रीय अध्ययन'' प्रकाशित शोध प्रबन्ध, जे.के. पब्लिकेशन, इलाहाबाद।
4. डॉ0 विवेकी राय (2003) ''जीवन अज्ञात का गणित है'' सट साहित्य प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण।
5. उमेश चन्द्र अग्रवाल (2006) ''वरिष्ठ नागरिकों की बढ़ती संख्या'' कुरूक्षेत्र फरवरी, 2006।
6. उमेश चन्द्र अग्रवाल, ''माता–पिता और वरिष्ठ भरण–पोषण तथा कल्याण अधिनियम, 2007
7. डा0 अभिजीत भौमिक, सुनीता भौमिक (2008) ''वृद्धजनों की समस्याएँ – एक सामाजिक दृष्टिकोण'', शोध उपक्रम, छत्तीसगढ़, शोध संस्थान, रामपुर, अंक 27
8. देवी प्रसाद तिवारी, प्राचीन भारत में विधवाएँ, तरूण प्रकाशन, लखनऊ, 1994
9. प्रदीप त्रिपाठी, मानवाधिकार और भारतीय संविधान, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2002
10. A.S. Altekar, "The Position of women in Hindu civilization", Motilal Banarasidas Publisher, Delhi, 1959.

KAAV

Copyright © 2017 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.org